ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 18 अंक 18 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 सितम्बर, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853123 सम्वत् 2079 आ. कृ.-12

आर्य समाज के भामाशाह, प्रसिद्ध दानवीर, विश्व आर्य रत्न ठाकुर विक्रम सिंह जी का 80वाँ जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

इस अवसर पर ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट द्वारा सैकड़ों आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आर्य खिलाड़ियों, गुरुकुल के आचार्यों, आर्य युवक परिषद् तथा आर्य वीरदल के व्यायाम शिक्षकों, जीवनदानी कार्यकर्ताओं, भजनोपदेशकों तथा आर्य वीरांगनाओं को सम्मानित किया गया

ठा. विक्रम सिंह जी ने आर्य संन्यासियों, विद्वानों एवं उपदेशकों आदि को सम्मान, सहयोग एवं प्रतिष्ठा प्रदान करके आर्य समाज के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय जोड़ा है

– स्वामी आर्यवेश

ठा. विक्रम सिंह जी आर्य समाज के आदर्श नेता एवं धर्म प्रचारक हैं

– स्वामी प्रणवानन्द

आज आर्य समाज के नेता ओर राष्ट्र निर्माण पार्टी के संस्थापक ठाकुर विक्रम सिंह जी के 80वें जन्मदिवस पर ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट द्वारा सैंकड़ों आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आर्य खिलाड़ियों, गुरुकुलों के आचार्य, आर्य युवक परिषद तथा आर्य वीर दल के व्यायाम शिक्षक, जीवनदानी कार्यकर्ता, आर्य भजनोपदेशक, आर्य भजनोपदेशिकाओं एवं आर्य वीरांगनाओं का सम्मान किया गया। सम्मान समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानंद सरस्वती जी ने की। इस आर्यन अभिनन्दन समारोह का आयोजन आर्य आडिटोरियम, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में किया गया था। इस कार्यक्रम में मुख्यरूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी, अंतरराष्ट्रीय पत्रकार डॉ. वेदप्रताप वैदिक जी, अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी, राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीशी, आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र, राष्ट्र निर्माण पार्टी के अध्यक्ष डॉ. आनन्द कुमार, वेद विदुषी डॉ. सुकामा आचार्या, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, गुरुकुल पौंधा के आचार्य धनंजय, मिशन आर्यावर्त के निदेशक तथा गुरुकुल धीरणवास के अध्यक्ष स्वामी आदित्यवेश जी, मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, आर्य पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, पूर्व मंत्री श्री ओमवीर तोमर आदि ने मंच को सुशोभित किया। मंच का सुचारू रूप से संचालन दिल्ली संस्कृत अकादमी के पूर्व सचिव एवं प्रतिष्ठा युवा विद्वान् डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री ने किया तथा आचार्य मेघश्याम शास्त्री ने उनका सहयोग किया। वैदिक विद्वानों द्वारा ठाकुर विक्रम सिंह जी को जन्मदिवस को शुभकामनाओं के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

सर्वप्रथम ठा. विक्रम सिंह जी का विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने शॉल, श्रीफल, फूलों के गुलदस्ते और माल्यार्पण के द्वारा सम्मानित किया। सम्मानित करने वालों में मुख्य रूप से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्, श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्, आर्य वीरदल, मानव सेवा प्रतिष्ठान तथा विभिन्न गुरुकुलों एवं आर्य समाजों के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि ठाकुर विक्रम सिंह जी ने समाज में एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने आर्य संन्यासियों, वैदिक विद्वानों, आर्य भजनोपदेशकों, जीवनदानी कार्यकर्ताओं, आर्य युवक परिषद, आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना दल के शिक्षकों के सम्मान का जो कार्यक्रम प्रारंभ किया है वह आज तक के आर्य समाज के इतिहास में देखने को नहीं मिलता। धनवान बहुत होते हैं परन्तु जो अपने धन का प्रयोग वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार को समर्पित प्रचारकों को प्रोत्साहित, उत्साहित तथा पुरस्कृत करने के लिए करते हैं वही समाज में नए आयाम स्थापित करते हैं। इनका नेतृत्व एवं मार्गदर्शन जितना ज्यादा समाज को मिलेगा उतना ही समाज तरक्की एवं उन्नति करेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अनेक गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानंद जी ने कहा कि ठाकुर विक्रम सिंह जी एक आदर्श नेता तथा एक आदर्श वैदिक धर्म प्रचारक हैं। वर्तमान समय के आर्य जन उनसे

शेष पृष्ठ 7 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वैदिक धर्म मानवता के कल्याण की बात करता है

– डॉ. प्रवेश सक्सेना

एक उर्दू कवि ने कहा है 'आदमी को मयस्सर नहीं इंसां होना।' वास्तव में इंसानियत, मनुष्यता या मानवता आज नितान्त दुर्लभ हो गई है। इस भौतिकतावादी युग में सांसारिक वैभव, ऐशो-आराम के साधनों को जुटाने की दौड़ में शामिल मनुष्य कब अपने स्वभावगत मानवीय गुणों को तिरस्कृत कर बैठता है उसे स्वयं पता नहीं रहता। प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा उसके मन को स्वार्थ के संकीर्ण घेरे में आबद्ध कर द्वेष-ईर्ष्या से भर देती है। ऐसे में दया, करुणा, तथा हृदय की उदारता जैसे स्वाभाविक सहज-सरल मानवीय मूल्य तिरोहित हो जाते हैं।

एक ओर आज है आर्थिक नीतियों का 'उदारवाद' और निरन्तर विकसित होते दूरसंचार के माध्यम जो 'वैश्वीकरण' को सिद्ध करते हैं। परन्तु दूसरी ओर है राष्ट्र-राष्ट्र में, व्यक्ति-व्यक्ति में बढ़ती हुई भावनात्मक दूरियाँ। अनुदारता एवं अविश्वास के वातावरण में पनपता जाता है हिंसात्मक आतंकवाद। बुद्धिजीवी मानते हैं विश्व के सामने यह महासंकट है और इससे उबरने के लिए अध्यात्मक की खुराक बहुत जरूरी है। पर विभिन्न आध्यात्मिक दर्शन तथा धर्मों के नाम पर भी कोई छोटे-मोटे वितण्डावाद नहीं, अच्छे-खासे युद्ध हो जाते हैं, जिनकी विभीषिका से मानवता ही सबसे अधिक लहुलुहान होती है।

ऐसी स्थितियों में वैदिक धर्म का 'मानवतावाद' बहुत प्रासंगिक प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ जाति, वर्ण, धर्म और राष्ट्र के नामों के घेरे नहीं हैं, सर्वत्र मनुष्य और मनुष्य धर्म की बात है। वेद स्वयं कहते हैं वेद की शिक्षाएं मानवकल्याण के लिए हैं।

यथा भर्गस्वतीं वाचम् आवदानि जनाँ अनु।

अथर्ववेद 6.69.1

अर्थात् मैं गरिमापूर्ण वाणी मानवता के समूहों के लिए बोलूँ। इसी तरह यजुर्वेद (26.18) में विश्वमानुषों के हित के लिए कल्याणमयी शिक्षा देने की बात कही गई है। एक और मंत्र (यजु. 26.2) तो स्पष्ट घोषणा करता है कि वैदिक वाणी सम्पूर्ण मानवता को सम्बोधित करती है जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र समाहित हैं। सबकी समान समृद्धि से ही वास्तव में सम्पूर्ण समाज, राष्ट्र और विश्व या मानवमात्र की समृद्धि सम्भव है। वेद के मानव धर्म में छोटे-बड़े छूत-अछूत, ज्येष्ट-कनिष्ठ का कोई भाव है ही नहीं (ऋग्वेद 5.60.5)। यहाँ सभी परस्पर भ्रातृभाव के बन्धन में बंधे हुए हैं तथा सब मिलकर सौभाग्य के लिए प्रयत्न करते हैं। अथर्ववेद (19.6.2.1) स्पष्ट आदेश देता है शूद्र और आर्य सबका प्रिय, सबका कल्याण देखें। यही नहीं इस संदर्भ में अजनबी व अपरिचित तथा परिचित दोनों को अपराध मुक्ति के लिए प्रार्थनाएं की गई हैं (ऋ. 5.85.7)।

वेद बार-बार स्वीकार करते हैं कि 'ईश्वर सबका सांझा है, सामान्य है - 'समानम् इन्द्रम् अवसे हवामहे' (ऋ. 8.99.8)। सभी मानवी प्रजाएं इन्द्र की स्तुति करती हैं (ऋ. 8.46.12) अथर्ववेद (4.16.8) के अनुसार ईश्वर हमारी भूमि का भी उतना अपना है जितना विदेशी भूमि का।

वैदिक ज्ञान को आत्मसात करते हुए तथा एक सत् या परमसत्ता की अद्वितीयता को स्वीकारते हुए मनुष्य अधिकाधिक उदार होता जाता है। उसकी दृष्टि व्यापक होती है, दृष्टिकोण दूरदर्शी होता है। यह उदारता मनुष्य को परिवार, जाति, समाज, देश एवं सम्पूर्ण धरा के व्यक्तियों से जोड़ती है, आत्मीयता को पुष्ट करती है। जन-जन के प्रति आत्मीयता जहाँ होगी वहाँ द्वेष-घृणा के लिए स्थान बचता ही नहीं। पर वैदिक मानव धर्म यदि मानवकल्याण तक सीमित रहता तो शायद उसे संकुचित ही कहा जाता पर वह तो 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' (यजे. 36.18) सभी जीवित प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखने का पक्षधर है और विनिमय में सभी प्राणियों की मैत्री का इच्छुक भी है। और मित्रता का भाव जहाँ हो वहाँ हमेशा कल्याण, स्वस्ति और शान्ति विराजती है। तभी तो वेद के शान्तिपाठ में यदि तीनों लोकों, जल, औषधियों, वनस्पतियों की शांति काम्य है तो साथ ही सम्पूर्ण वैदिक जनों (विश्वे देवाः), ज्ञान की शान्ति की इच्छा है। बौद्धिकता और ज्ञान यदि सर्वकल्याण भाव से प्रेरित नहीं होता तो अशान्ति का कारण बन जाता है। वैज्ञानिक उन्नति तथा आणविक शक्ति का प्रचार-प्रसार आज के मानव को शान्ति नहीं दे पाया है और 'शान्ति का भ्रम पैदा कर सकता है पर वह वास्तविक शान्ति नहीं है। सच्ची शान्ति में आनन्द निहित रहता है। विश्व मैत्री के स्तर पर वेद में बहुत बार 'विश्वामानुष' शब्द का प्रयोग हुआ है जो मानवता की सम्पूर्णता को भी अभिव्यक्त करता है। विश्वमैत्री तथा विश्वशान्ति के उदात्त सिद्धान्तों से परिवेश की रक्षा सहज रूप में हो जाती है। तब प्रदूषण की समस्या से अलग से जूझने की जरूरत ही नहीं रहती।

'मित्र' का अर्थ होता है जो 'कष्ट' से उबारे। इसीलिए मित्रता में स्नेह, करुणा व कल्याण के भाव भरे होते हैं। घृणा-द्वेष का यहाँ कोई काम ही नहीं रहता। तब मनुष्य सबकी उन्नति में हर्षित होता है तथा दुःखीजन की सहायता करता है। ऐसी मित्रता ही निर्भयता का अभयता का संसार रचती है। तब सर्वत्र अभय का संचार होता है तथा सारी दिशाएं 'मित्र' बन जाती हैं। 'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु' (अथर्ववेद 19.15.6) जैसे एक घोंसले में लौटकर दिनभर उड़ान भरते पक्षी को आश्रय, विश्रान्ति व आनन्द मिलता है वैसे ही शान्ति, निर्भयता से परिपूर्ण परिवेश के कारण पूरा विश्व एक नीड़ बन जाता है, घोंसला बन जाता है - 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्'' (यजुर्वेद 32.8)।

मानव का चिरन्तन चरम उद्देश्य है संशय से, मोह से, शोक से मुक्ति और यजुर्वेद (40.6.7) हमें सिखाता है जब हम जड़-चेतन को ईश्वर में तथा ईश्वर को सभी विषयों में व्यापक मान लेते हैं, समझ लेते हैं तो हमारे संशय मिट जाते हैं। आत्मा की दिव्य अनुभूति जब कण-कण में होने लगती है तब मोह, शोक नष्ट हो जाते हैं।

अब यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या यह विश्वमैत्री, विश्वबन्धुत्व अथवा सर्वत्र समानानुभूति के भाव, मात्र सैद्धान्तिक हैं या इन्हें व्यवहार में भी उतारा जा सकता है? वेद का उत्तर बार-बार हाँ है। 'विश्व मानुष' की तर्ज पर यहाँ एक शब्द है 'विश्वभोजस्' जिसका अर्थ है विश्व के भोग्य पदार्थ सबके लिए हैं, कुछेक के लिए नहीं है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद को निर्देश है - 'केवलाधो भवति केवलादी' (ऋ. 10.117.6) - 'अकेले खाने वाला पापी होता है।' यजुर्वेद (40.1) का कथन है - 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्' अर्थात् त्याग करके उतना ही भोग करना चाहिए जितना आवश्यक है। दूसरे के धन का लोभ नहीं करना चाहिए। महात्मा गाँधी ने भी कहा था यह पृथ्वी सबकी जरूरतों को पूरा कर सकती है पर किसी एक के भी लालच को नहीं।

इस धरती को हमें इसके सुखों, दुःखों, संघर्षों के साथ स्वीकार करना चाहिए तथा इस पर स्वामित्व या अधिकार भाव से रहना जरूर चाहिए। परन्तु इस अधिकार भाव से अहं नहीं पनपना चाहिए। यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह किसी जाति विशेष या समूह विशेष के लिए नहीं है यहाँ विभिन्न जातियाँ, विभिन्न समूह निवास करते हैं जो विभिन्न भाषाएं बोलते हैं, विभिन्न पूजा पद्धतियाँ भी अपनाते हैं। परन्तु तब भी 'मानवता' एक सामान्य गुण है जिसका विकास हरेक को करना चाहिए। वैदिक धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी को एक मानकर उसके वासी मनुष्यों को उसका पुत्र मानता है। पृथ्वी-पुत्रों को यदि पृथ्वी के वरदान सहज रूप में उपलब्ध है तो उनके कर्तव्य भी हैं उस धर्मपालन के जिससे पृथ्वी का धारण किया जाता है।

सत्यं बृहद् ऋतम्, उग्रम् दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति' (अथर्ववेद 2.11) अर्थात् सत्य, ऋत, क्षत्र, दीक्षा, तप और ब्रह्म तथा यज्ञ पृथ्वी का संरक्षण करते हैं। ये सब सार्वभौमिक या वैश्विक सत्य हैं या मूल्य हैं जो किसी एकमत या धर्म (सम्प्रदाय) पर लागू नहीं होते। मानव मात्र के लिए ही है ये सब। वैसे भी 'धर्म' शब्द आज के युग में सम्प्रदाय या मत का वाचक हो गया है। जबकि 'मूल' अर्थ में 'धारणात् धर्म' - धारण करने से धर्म होता है। 'सत्य' को लगभग अन्य सभी विश्वास भी महत्त्व देते हैं। व्यक्तिगत या सामाजिक स्तर पर सत्य के पालन से राष्ट्र संरक्षण होता है। तब 'भ्रष्टाचरण' की समस्या ही नहीं रहती। 'ऋत्' वेद में नैतिक व्यवस्था व विश्वव्यवस्था दोनों को अभिव्यक्त करता है। कहना न होगा 'व्यवस्था' जीवन को संवारती है। दीक्षा ब्रह्मचर्य के उस भाग का नाम है जब गुरु-शिष्य ज्ञान के विकास के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न करते हैं। इसी प्रकार 'तप' नाम है निरन्तर परिश्रम करने का गतिशील रहने का। ब्रह्मा है ज्ञान जिसके अन्तर्गत विविध विद्यार्जन तो आता ही है सबसे प्रमुख 'अध्यात्म' भी समाहित रहता है। वैदिक धर्म की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहाँ धर्म के नैतिक रूप को अधिक महत्त्व दिया गया है।

कर्मकाण्ड को उतना नहीं। यही कारण है 'यज्ञ' इस श्रृंखला में सबसे अन्त में तथा 'सत्य' सबसे पहले 'यज्ञ' मात्र कर्मकाण्ड नहीं है। समर्पण भाव ही यज्ञ है। मानवीय गुणों में से सत्य, ऋत, ज्ञानादि जब विकसित हो जाते हैं तो नम्रता जन्मती है और मनुष्य सबके प्रति समर्पणभाव से कर्म करने को प्रस्तुत रहता है।

वैदिक धर्म बहुत प्रगतिशील है। अकर्मण्यता के लिए यहाँ कोई स्थान ही नहीं है। इसीलिए मात्र सैद्धान्तिक कहकर इसे टाला नहीं जा सकता। पूर्णतः व्यावहारिक जीवन निरन्तर आगे बढ़ने का संदेश देता है। जीवन संघर्षों में जूझते रहने का नाम वैदिक धर्म है। 'इन्द्र' भी अर्थात् ईश्वर भी गतिशील व्यक्ति का साथ देता है।

इसीलिए 12वीं सदी में यदि हम वैदिक धर्म की गतिशीलता, नैतिकता और मानवता को लेकर चलेंगे तो आज के संकटों, महासंकटों से अवश्य छुटकारा मिलेगा। हलचलों भरे जीवन की विश्रान्ति के लिए वेद का मानव धर्म आज नितान्त प्रासंगिक है तथा विश्रान्तिदायक है। ऋग्वेद का निम्न मंत्र काव्यात्मक रूप में मनुष्य को 'मनुर्भव' का संदेश देता है -

तन्तु तन्वन् राजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथोरक्ष धिया कृतान्।
अतुल्बलं वयता जोगमुवामपो,
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्। (ऋ. 10.55.6)

अर्थात् हे मनुष्य तू अपने जीवन तन्तु का विस्तार करता हुआ लोकमात्र के प्रकाशक को प्राप्त हो। (इसके लिए) तू बुद्धि से ज्योतिष्मान मार्गों की रक्षा कर। स्तुति शब्द करने वाले विद्वानों के उलझन रहित कर्म रूप वस्त्र बुन। तू मनु अर्थात् मननशील मनुष्य बन। अपने को देवश्रेणी का जन बना। (मन्त्रार्थ डॉ. कृष्ण लाल)।

यह मन्त्र वास्तव में वैदिक मानवतावाद का सार है। मनुष्य का अस्तित्व तीन श्रेणियों में विभक्त है - (1) पशुस्तर पर - जहाँ 'आहारनिंद्राभयमैथुन' में ही लीन रहता है वह। तथा आत्मिक विकास की बात दूर रही उसे अपनी बौद्धिक और मानसिक शक्तियों पर विश्वास ही नहीं होता। इसलिए जीवन व्यर्थ हो जाता है। कई बार उचित अवसर न मिलने पर भी यह स्थिति होती है। (2) मनुष्य स्तर पर - व्यक्ति यथाशक्ति पारिवारिक पृष्ठभूमि की सहायता पाकर स्थूलता से ऊपर उठ सूक्ष्म मानवीय मूल्यों को सीखकर जीवन में उतारने की सोचते हैं। (3) उच्चतम स्तर है जब मानव दिव्यता अंगीकार कर दिव्य जनों की श्रेणी में आ जाता है। मानवमात्र के अस्तित्व का लक्ष्य 'देवत्व' की सिद्धि है। देव क्या है? देव वह है जो दान देता है, ज्ञान से तेजस्वी होता है और दूसरों के दीप अपने ज्ञान-प्रकाश से ज्योतित करता है।

यहाँ ध्यातव्य है कि वेद व्यक्ति के विकास को महत्व देता जरूर है पर यह विकास परिवार, समाज और विश्व के विकास के योगदान में लगना आवश्यक है। सम्पूर्ण मानव जाति को गहराई से देखकर, उसमें विद्यमान सूत्र को देखकर, व्यक्ति जब समष्टि में समा जाता है तभी वैश्विक कल्याण सधता है। ऋग्वेद के अन्तिम सौमनस्य सूक्त का मुख्य स्वर 'समान मन वाला' होकर जिएं यही है। सबका संकल्प, सबके हृदय व सबके मन एक समान हों तथा सबके कार्य परस्पर संगठित हों।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।
यही वैदिक मानवतावाद की प्रार्थना है।

भारतवर्ष के उत्थान में महर्षि दयानन्द का योगदान

– कृष्ण चन्द्र गर्ग

1. जब महर्षि दयानन्द आए, तब हिन्दू जाति मृत प्रायः हो चुकी थी जैसे उसकी रीढ़ की हड्डी ही न हो। मुसलमानों और ईसाईयों के तर्कों का वे उत्तर न दे पाते थे। वे धड़ाधड़ मुसलमान और ईसाई बनते जा रहे थे। महर्षि दयानन्द ने हिन्दुओं के साथ–साथ इस्लाम और ईसाइयत की कमजोरियों का पर्दाफाश किया। हिन्दुओं को उनके वास्तविक वैदिक धर्म से परिचित कराया। हिन्दुओं में आत्म गौरव और आत्म सम्मान भरा। हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनने बन्द हुए। उल्टा मुसलमान और ईसाई बने हिन्दुओं को वापिस वैदिक धर्म में आने के लिए प्रेरित किया गया। हिन्दुओं को हटाओ की बजाय बढ़ाओ की प्रेरणा दी। जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि अन्दोलन के रूप में सामने आया।

भारत के गवर्नर जनरल रहे श्री सी. राजगोपालाचार्य ने कहा था– "Dayanand came when there was chronic danger of Islam on one side and of Christianity on the other. He saved Hinduism from all dangers fighting against them boldly"

अर्थ– दयानन्द ऐसे समय में आए, जब एक तरफ इस्लाम का और दूसरी तरफ ईसाईयत का बड़ा खतरा था। उन्होंने उनसे बहादुरी से लड़कर हिन्दुओं को सब खतरों से बचाया।

2. वेद– महर्षि दयानन्द जब आए, तब वेद लुप्त प्रायः हो चुके थे। पण्डित लोग कहते थे कि वेदों को तो शंखासुर ले गया है। महर्षि दयानन्द ने उन्हें पुनः उपस्थित किया। उवट, सायण, महीधर आदि आचार्यों ने वेदों के अर्थों का अनर्थ कर दिया था। उन्हें देखकर जर्मनी के संस्कृत के विद्वान् मैक्समूलर ने सन् 1870 में वेदों को गडरियों के गीत, बच्चों की बिलबिलाहट, जादू टोने आदि की पुस्तकें बताया था। महर्षि दयानन्द ने वेदों का यथार्थ भाष्य किया और उन्हें सब सत्य विद्याओं का पुस्तक बताया। महर्षि दयानन्द ने बताया कि वेद ईश्वर का दिया ज्ञान है जो अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा– इन चार ऋषियों के हृदयों में ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में दिया। यह सभी मनुष्यों के लिए, मानवता का ज्ञान और विधान है।

महर्षि का वेद भाष्य पढ़ने के बाद सन् 1882 में मैक्समूलर ने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैण्ड में ICS के विद्यार्थियों को भारत के सम्बन्ध में सात भाषण दिए थे। वे सातों भाषण "India, what can it teach us" नामक पुस्तक में प्रकाशित हुए थे। तीसरे भाषण में मैक्समूलर ने कहा था–

"I maintain that for a study of man there is nothing in the world equal in importance with the Vedas."

अर्थ– मैं मानता हूँ कि मानवता के अध्ययन के लिए वेदों के समान महत्त्वपूर्ण संसार में और कुछ भी नहीं है।

UNESCO ने ऋग्वेद को धरोहर (Heritage) स्वीकार किया है।

श्री अरविन्द घोष ने इसी सम्बन्ध में लिखा है–

"There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Vedas contain truth of science as well as truth of religion. I will add my own conviction that Vedas contain the other truth of science the modern science does not at all possess"

अर्थ– दयानन्द का विचार कि वेदों में विज्ञान और अध्यात्म दोनों विद्यमान हैं अजीब नहीं है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि वेदों में वह विज्ञान भी है जो आज के वैज्ञानिक नहीं जानते।

3. हिन्दी भाषा – हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनवाने का श्रेय महर्षि दयानन्द को है। अब से लगभग 145 वर्ष पूर्व सबसे पहले महर्षि दयानन्द ने हिन्दी को देश की भाषा के रूप में पहचाना था। वे स्वयं गुजराती थे और संस्कृत के विद्वान् थे। पर उन्होंने अपना सारा लेखन और भाषण हिन्दी में किया। उनका दृढ़ मत था कि देश की एकता के लिए सारे देश की एक भाषा हो और वह भाषा देवनागरी लिपि में हिन्दी ही हो सकती है। हिन्दी को वे 'आर्य भाषा' के नाम से पुकारते थे।

बाद में मुंशी प्रेमचन्द ने भी अपना साहित्य हिन्दी में देकर हिन्दी के उत्थान में बड़ा योगदान किया।

गाँधी जी ने देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जाने वाली हिन्दी–उर्दू मिश्रित भाषा को देश की भाषा बनाने की वकालत की थी और उस खिचड़ी भाषा का नाम हिन्दोस्तानी रखा था।

परन्तु भारत के संविधान निर्माताओं ने 14 सितम्बर 1949 को 12 के मुकाबले 312 के भारी बहुमत से देवनागरी लिपि में हिन्दी को देश की राजभाषा के तौर पर स्वीकार किया था। हिन्दी भाषा के विस्तार के लिए आवश्यकता पड़ने पर शब्द लेने के लिए हमारे संविधान में विशेष तौर पर संस्कृत भाषा को नामित किया गया है।

4. स्वतन्त्रता आन्दोलन– महर्षि दयानन्द ने अपनी लेखनी और भाषणों द्वारा हिन्दुओं में स्वाधीनता की भावना भरी जिसके परिणाम स्वरूप आर्यों ने स्वाधीनता संग्राम में बढ़चढ़ कर भाग लिया। अदीना स्याम् शरदः शतम्– अर्थात् हम स्वतन्त्र रहते हुए सौ वर्ष तक जीएँ– का वेदमन्त्र महर्षि ने हमें दिया।

कांग्रेस अध्यक्ष पट्टाभि सीता रमैया ने अपनी पुस्तक 'स्वतन्त्रता का इतिहास' में लिखा है कि स्वतन्त्रता अन्दोलन में 85 प्रतिशत आर्य थे। बाकी 15 प्रतिशत में सनातनी, जैनी, सिख, मुसलमान, ईसाई सभी आ जाते हैं।

पट्टाभि सीता रमैया ने महर्षि दयानन्द को राष्ट्र पितामह बताया था जबकि गाँधी जी को राष्ट्रपिता। जो जो कार्य गाँधी जी ने अपनाए वे सब उससे पचास साल पहले महर्षि दयानन्द ने आरम्भ किए थे। उदाहरण– स्वदेशी, खादी और ग्रामोद्योग, अछूत उद्धार, महिला उत्थान, गो संरक्षण आदि। महर्षि ने बीज बोया और गाँधी जी ने फसल काटी।

डॉ. एनी बीसैंट एक अंग्रेज औरत थी जिसने भारत की स्वतन्त्रता के लिए काम किया। उसने कहा था– "When the Swaraj Temple is built there will be images of the leaders of the freedom movement and that of Swami Dayanand will be the tallest."

अर्थ– जब स्वराज का मन्दिर बनेगा, उसमें स्वतन्त्रता अन्दोलन के नेताओं के चित्र (बुत) लगेंगे और उनमें स्वामी दयानन्द का चित्र (बुत) सबसे बड़ा होगा।

मोती लाल नेहरू ने जेलों में घूमने के बाद गाँधी जी को जो रिपोर्ट दी थी उसमें कहा गया था कि जेलों में 80 प्रतिशत आर्य समाज के लोग हैं।

लाला लाजपत राय ने कहा था– आर्य समाज कट्टर राष्ट्रीयता में विश्वास रखता है।

महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित होकर स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, पण्डित लेखराम, पण्डित गुरुदत्त, लाला लाजपत राय, भगतसिंह के दादा अर्जुन सिंह, पिता किशन सिंह, चाचा अजीत सिंह आदि कितने सज्जन समाज और राष्ट्र की सेवा में उतरे।

स्वामी श्रद्धानन्द, जिनका नाम पहले मुंशी राम था, ईसाईयत की ओर झुक रहे थे। महर्षि दयानन्द के साथ मुलाकात के बाद पक्के आर्य और राष्ट्रभक्त बन गए। लाला लाजपत राय इस्लाम की तरफ झुके हुए थे। वे आर्यों की संगति से आर्य बने और देश की स्वतन्त्रता के लिए लड़ते हुए शहीद हुए।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

मौलवी महबूब अली जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में बड़ी मस्जिद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे इस्लाम को छोड़कर आर्य बन गए। अब वे महेन्द्रपाल आर्य के नाम से वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं।

5. शिक्षा– महर्षि दयानन्द ने बच्चों के लिए शिक्षा पर विशेष बल दिया था। उनके शिष्य आर्यों ने बहुत से आर्य स्कूल व कॉलिज स्थापित किए तथा दयानन्द ऐंग्लो वैदिक (डी.ए.वी.) नाम से शिक्षण संस्थाओं का देश भर में जाल बिछा दिया है।

हिन्दू समाज में लड़कियों को पढ़ाना बुरा माना जाता था। महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का ही प्रभाव है कि अब सभी हिन्दू अपनी लड़कियों को शिक्षा, बल्कि उच्च शिक्षा दिला रहे हैं।

6. समाज सुधार के कानून– हिन्दू विधवा स्त्री के पुनर्विवाह के विरुद्ध थे। सन् 1856 में पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की कोशिश से अंग्रेज सरकार ने विधवा विवाह एक्ट बना दिया जिससे विधवा स्त्री के पुनर्विवाह को मान्यता मिल गई। परन्तु पण्डितों के विरोध के चलते यह कानून व्यवहार में न आ सका। बाद में जब आर्य समाज ने इस काम को अपने हाथ में लिया तभी विधवा विवाह का प्रचलन हुआ।

हिन्दू अपनी छोटी उमर की लड़कियों की शादी बड़ी उमर के आदमियों के साथ कर देते थे। आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेता श्री हरविलास शारदा के प्रयास से सन् 1929 में अंग्रेज सरकार ने इसके विरुद्ध कानून बना दिया जिसका नाम है – Child marriage restraint ActA तब उसका विरोध तिलक जैसे महानुभाव ने भी किया था। युक्ति थी ईसाई सरकार को हमारे धर्म में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है।

हिन्दू समाज में पति के मरने पर पत्नी को पति के साथ ही जीवित ही जला देने की कुप्रथा थी जिसे सतीप्रथा कहते हैं। राजा राजमोहन राय के प्रयत्न से अंग्रेज सरकार ने सन् 1828 में इसके विरुद्ध कानून बनाया। बाद में आर्य समाज ने इसे हाथ में लिया और दृढ़ता से इसका पालन किया और करवाया।

जन्म की जातपात तोड़कर विवाह को वैधता देने वाला जो कानून है वह आर्य समाज के बड़े नेता श्री घनश्याम सिंह गुप्त के प्रयास से अंग्रेज सरकार ने सन् 1937 में बनाया था। उस एक्ट का नाम Arya Marriage Validation Act है। महर्षि दयानन्द ने जन्म की जातपात और छुआछूत को पूरी तरह नकारा था।

7. सत्यार्थप्रकाश– महर्षि दयानन्द ने एक अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' दिया। उसमें जन्म से मृत्यु तक मनुष्य को क्या–क्या करना चाहिए और कैसे जीना चाहिए सब ज्ञान वेदों के अनुकूल दिया गया है, संसार में व्याप्त सभी पन्थों (मजहबों) के गुण–दोष बताकर सभी को सचेत किया गया है, वेद के सार्वकालिक और सार्वभौमिक मानव धर्म पर प्रकाश डाला गया है और ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वर्णन किया गया है। 'सत्यार्थप्रकाश' में 377 ग्रन्थों के सन्दर्भ हैं और 1542 वेद मन्त्रों और श्लोकों के उदाहरण हैं। 'सत्यार्थप्रकाश' को पढ़कर लाखों लोग पाखण्ड, अन्धविश्वास, अज्ञान से निकल कर सत्य के प्रकाश का आनन्द लेने लगे हैं।

'सत्यार्थप्रकाश' के सम्बन्ध में वीर सावरकर ने कहा था–

'हिन्दुओं की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।'

8. पाखण्ड और अन्धविश्वास पर चोट– महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने मूर्तिपूजा, ग्रह, फलित ज्योतिष, भूत–प्रेत, तागा–ताबीज, जादू–टोना आदि पाखण्ड और अन्धविश्वास पर तगड़ी चोट मारी। इन्हें अज्ञानता से पैदा हुई गलत धारणाएँ बताया। ईश्वर का सच्चा स्वरूप बताकर मूर्तिपूजा को हानिकर बताया। मनुष्य के सुख–दुख का कारण ग्रह नहीं। ग्रह तो जड़ हैं। वे किसी का भला या बुरा नहीं कर सकते। सुख–दुख का कारण मनुष्य के अपने अच्छे–बुरे काम हैं। उन कामों के फलस्वरूप ही मनुष्य को सुख–दुःख होता है। फलित ज्योतिष (Astrology) का वेदों में या किसी भी वैदिक ग्रन्थ में कहीं कोई नामो–निशान नहीं है। ये सारी बातें साधारण लोगों को ठगने के साधन मात्र हैं। जो पहले था और अब नहीं रहा उसे भूत कहते हैं जैसे बीते समय का नाम भूतकाल है। किसी व्यक्ति के मरने पर मृतक शरीर का नाम प्रेत है। तागा–ताबीज, जादू–टोना आदि भी धूर्तों के द्वारा पैदा किए हुए टोटके हैं।

9. साहित्य शोधन– आर्यों (हिन्दुओं) के साहित्य को स्वार्थी लोगों ने अपनी मनमर्जी से मिलावट करके दूषित कर दिया है। महर्षि दयानन्द और उनके शिष्य आर्यों ने उस मिलावट को अलग करके सत्य साहित्य प्रकाशित किया जिनमें वाल्मीकि रामायण, महाभारत, मनुस्मृति आदि प्रमुख हैं। महर्षि दयानन्द ने सत्य और असत्य ग्रन्थों की सूची हमें दी कि कौन से ग्रन्थ पढ़ने चाहिये और कौनसे नहीं। जो ग्रन्थ सत्य वैदिक धर्म को प्रतिपादित करते हैं उन्हें पढ़ने योग्य की सूची में रखा और जो असत्य बातों से भरे हैं उन्हें न पढ़ने योग्य ग्रन्थों की सूची में रखा।

श्री कृष्ण के पवित्र और महान् जीवन चरित को कलंकित करके प्रसारित किया जाता है। महर्षि दयानन्द ने इस पर तगड़ी आपत्ति उठाई और कहा कि 'महाभारत' की पुस्तक के अनुसार श्री कृष्ण एक धर्मात्मा और परोपकारी पुरुष थे। उन्होंने जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई भी बुरा काम नहीं किया। महाभारत में राधा नाम की किसी स्त्री का कोई जिक्र नहीं है।

10. नमस्ते और गायत्री मन्त्र– महर्षि दयानन्द ने अभिवादन के लिए सार्थक शब्द 'नमस्ते' दिया। जब भी दो व्यक्ति मिलें तो आपस में नमस्ते कहें। नमस्ते शब्द है– नमः + ते अर्थात् मैं आपका सम्मान करता हूँ। उसी में बड़ों के लिए आदर और छोटों के लिए प्यार की भावना छिपी है। वेदों में तथा अन्य वैदिक ग्रन्थों में अभिवादन के तौर पर 'नमस्ते' शब्द का ही प्रयोग किया गया है।

महर्षि दयानन्द ने विचारने के लिए तथा अमल करने के लिए वेद का मन्त्र 'गायत्री मन्त्र' दिया। इस मन्त्र में परमात्मा से उत्तम बुद्धि के लिए प्रार्थना की गई है। सभी मनुष्यों को उत्तम बुद्धि प्राप्त करने के लिए अच्छा सात्विक भोजन लेना चाहिए तथा बढ़िया पुस्तकों का स्वाध्याय करना चाहिए।

आज देश–विदेश में करोड़ों लोग अभिवादन के तौर पर 'नमस्ते' शब्द का प्रयोग करते हैं तथा गायत्री मन्त्र का पाठ करते हैं।

प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था–

हमारा जितना उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है उतना और किसी ने नहीं किया।

11. मुंशी प्रेमचन्द की लेखनी में समाज सुधार के विषय पर महर्षि दयानन्द का प्रबल प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने एक कहानी लिखी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में महर्षि दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा है कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। 'मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएँ अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व धैर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूरत के दर्शनों से आकुल–व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।'

– 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा

हैदराबाद विजय दिवस के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से बलिदानी सत्याग्रहियों को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य समाजियों के बलिदान से हैदराबाद का विलय भारत में हुआ

–स्वामी आर्यवेश

वर्तमान परिस्थितियों में पुनः राष्ट्रीय अखण्डता अक्षुण रखनी होगी

–अनिल आर्य

रविवार 18 सितम्बर, 2022 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में "हैदराबाद विलय दिवस" की 74वीं वर्षगांठ पर बलिदानी सत्याग्रहियों को आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली में यज्ञ करके श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज के आन्दोलन के कारण मजबूर होकर 17 सितम्बर, 1948 को हैदराबाद के निजाम ने भारत में विलय स्वीकार किया था।

आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि देश के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान रहा। आज 17 सितम्बर का दिन पूरे देश में हैदराबाद विजय दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। यह सर्वविदित है कि हैदराबाद के निजाम ने आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक गतिविधियों पर कई प्रकार के प्रतिबंध लगा दिये थे। जैसे मन्दिरों में घंटी बजाना, पूजा पाठ करना, जुलूश निकालना, आर्य मंदिरों और घरों पर ओ३म् ध्वज लगाना और हवन यज्ञ करने पर भी पूरी तरह से अंकुश लगा दिया गया था। ऐसी स्थिति में आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निजाम के अत्याचारों तथा लगाये गये प्रतिबन्धों को खत्म कराने के लिए ऐतिहासिक आन्दोलन शुरू किया था जिसमें लगभग 12 हजार सत्याग्रही जेल गये थे। 40–45 सत्याग्रही जेलों में तथा जेलों से बाहर शहीद हुए। और अन्त में निजाम को झुकना पड़ा तथा सभी प्रतिबन्ध हटाने पड़े। यह आर्य समाज की निजाम के विरुद्ध पहली विजय थी। सन् 1947 में जब देश आजाद हुआ तो निजाम ने भारत में अपनी रियासत का विलय करने से मना कर दिया था और घोषणा कर दी थी कि वे भारत में नहीं मिलेंगे। उस समय आर्य समाज ने पुनः निजाम के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा और आर्य समाज के क्रांतिकारी नौजवानों ने उसके ऊपर बम तक फेंककर उसे भारत में विलय होने के लिए मजबूर किया। उस पर पूरा दबाव बनाया गया उसी के परिणामस्वरूप निजाम ने अपना समर्पण करके रियासत भारत सरकार को सौंप दी थी। हरियाणा के वर्तमान राज्यपाल जो हैदराबाद के निवासी हैं श्री बंडारू दत्तात्रेय ने गत दिनों महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के एक कार्यक्रम में बोलते हुए सार्वजनिक रूप से घोषणा की थी कि यदि आर्य समाज का आन्दोलन निजाम के विरुद्ध न हुआ होता तो हैदराबाद में तिरंगा झण्डा नहीं चढ़ाया जा सकता था। उन्होंने कहा कि हैदराबाद का विलय आर्य समाज की बदौलत हुआ। हैदराबाद आन्दोलन में भाग लेने वाले सत्याग्रहियों को तत्कालीन सरकार ने ताम्रपत्र तथा आजीवन पेंशन देकर सम्मानित किया था। अंग्रेजी सरकार की नजर में उस समय आर्य समाजी होना विद्रोही माना जाता था।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी ने कहा कि यह स्वतंत्रता ऐसे ही नहीं मिल गई इसके

लिए वीरों ने अपने बलिदान दिए हैं। आज उन बलिदानियों को स्मरण करके राष्ट्रीय अखंडता को अक्षुण बनाये रखने का संकल्प लेने की आवश्यकता है। आर्य समाज पूरे देश में राष्ट्र जागरण का अभियान चलाएगा।

आर्य पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने कहा कि आज वीरों के त्याग, बलिदान से नई पीढ़ी को अवगत कराना चाहिए, जिससे वह आजादी के महत्व को समझें।

कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य महेन्द्र भाई ने श्रद्धांजलि यज्ञ से किया। कार्यक्रम के दौरान भजनोपदेश के द्वारा श्रीमती प्रवीण आर्या पिंकी, कुसुम भण्डारी, प्रतिभा सपरा, प्रवीण आर्य (गाजियाबाद), सोनिया संजू आदि ने ओजस्वी गीत प्रस्तुत किये।

उत्तरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष श्री ओम सपरा जी ने कहा कि आर्य समाज द्वारा वेद के प्रचार–प्रसार हेतु छोटी–छोटी लघु पुस्तकों के लेखन कार्य के माध्यम से अनवरत जारी है। इस अवसर पर वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, श्री गोपाल आर्य, पूर्व पार्षद गुड्डी देवी जाटव, श्री रामचन्द्र आर्य (सोनीपत) आदि ने भी अपने विचार रखे।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से सर्वश्री यशोवीर आर्य, देवेन्द्र भगत, रामकुमार आर्य, देवेन्द्र गुप्ता, नेत्रपाल आर्य, सुनील खुराना, सुदेश भगत, रामचन्द्र सिंह, कैप्टन अशोक गुलाटी, राधा भारद्वाज, सुशील बाली, प्रेम चन्द शास्त्री, वेद प्रकाश आर्य, के.के. सेठी, संजीव आर्य, महावीर सिंह आर्य, अरुण आर्य, वरुण आर्य, अंकुर आर्य आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में विश्व शांति दिवस समारोह मनाया गया

दिनांक 21 सितम्बर, 2022 को प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में रिलिजन फॉर पीस और वर्ल्ड पीस ऑर्गेनाइजेशन तथा प्रेस क्लब आफ इंडिया के समन्वय से पौधा रोपण शांति का पेड़ लगाकर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका नाम था 'शांति का पेड़' (Tree for Peace)। इस अवसर पर जैन धर्म से आचार्य विवेक मुनि जी महाराज तथा आचार्य योग भूषण जी महाराज। बहाई धर्म से डॉ. ए.के. मर्चेंट। आर्य समाज के तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी। सिख धर्म से धरम सिंह निहंग और मौलाना ए. आर. शाहीन कासमी, महामंत्री, वर्ल्ड पीस आर्गेनाइजेशन, नई दिल्ली शामिल हुए। इनके अतिरिक्त प्रेस क्लब ऑफ इंडिया के अध्यक्ष उमाकांत लखेरा और अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

इस अवसर पर शांति के पौधा रोपण से पूर्व सभी धर्म के प्रतिनिधियों ने शांति के लिए प्रार्थना की और पेड़ से किस प्रकार शांति और खुशहाली और हरियाली आती है इसके सम्बन्ध में प्रकाश डाला। इसके साथ इस पर भी चर्चा हुई कि एक पेड़ से सीख लेते हुए समाज में अपने को एक फलदार पेड़ की तरह बनाना चाहिए। जिससे सभी को शीतल छाया एवं स्वास्थ्यकारी फल मिल सके। इस अवसर पर मौलाना ए. आर. शाहीन कासमी ने कहा कि पेड़ लगाना सदका जारिया है अर्थात निरंतर रहने वाला दान है।

प्रोग्राम का आरंभ राष्ट्रगीत से हुआ प्रेस क्लब आफ इंडिया के अध्यक्ष श्री उमाकांत लखेरा ने संतों का अभिनंदन किया और भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करते रहने का आग्रह किया। श्री सुधीर गंदोतरा जी ने भी पेड़ और पर्यावरण के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये। अन्त में कार्यक्रम में उपस्थिति सभी महानुभावों का मौलाना ए. आर. शाहीन कासमी ने आभार व्यक्त किया।

विश्व शांति दिवस के अवसर एवं विश्व विख्यात आर्य संन्यासी पूज्य स्वामी अग्निवेश जी के 84वें जन्मदिवस पर सामाजिक सद्भाव सम्मेलन का भव्य आयोजन

विभिन्न मत–सम्प्रदायों के धर्माचार्यों ने स्वामी जी से सम्बन्धित अपने संस्मरण सुनाये

विश्व शांति दिवस एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी का 84वाँ जन्मदिवस दिनांक 21 सितम्बर, 2022 को समारोह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन सार्वदेशिक सभा के सभागार में हुआ जिसमें विभिन्न मत–सम्प्रदायों एवं आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील मुनि जी महाराज ने की। मंच का कुशल संचालन युवा तेजस्वी संन्यासी स्वामी

आदित्यवेश जी ने किया।

इस अवसर पर आर्य समाज के यशस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, मिशन आर्यावर्त के निदेशक स्वामी आदित्यवेश जी, जैन सन्त आचार्य विवेक मुनि जी, बौद्ध प्रतिनिधि तिब्बतियन पार्लियामेंट के डिप्टी स्पीकर आचार्य येशी जी, बहाई मत के प्रतिनिधि और लोटस टेंपल दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. ए. के मर्चेंट जी, सरदार धरम सिंह निहंग जी, मौलाना शाहीन कासमी जी के अतिरिक्त वरिष्ठ संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि जी, आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, आर्य

प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, सामाजिक कार्यकर्ता श्री हवा सिंह हुड्डा जी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा राजस्थान के प्रदेश अध्यक्ष श्री राजेश याज्ञिक, डॉ लाल रत्नाकर (गाजियाबाद), सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रेम बहुखंडी (देहरादून), बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, प्रिंसिपल आजाद सिंह बांगड़ (सोनीपत), श्री निर्मल कुमार शर्मा (गाजियाबाद) सहित अनेक महानुभावों ने स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए अपने–अपने विचार रखे।

आज के कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे भारतीय सर्वधर्म संसद के अध्यक्ष गोस्वामी सुशील मुनि जी महाराज ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी केवल एक व्यक्ति नहीं थे बल्कि एक विचारधारा थे। मैं सनातनी होकर भी उनके विचारों का सम्मान करता था। वे सदैव सत्य बोलते थे, उनका हृदय पवित्र एवं निर्मल था। उन्होंने एक घटना सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी एक बार बहरीन गये हुए थे और मैं भी उनके साथ था। स्वामी जी ने वहाँ के खलीफा को सत्यार्थ प्रकाश एवं दोशाला भेंट किया तो वहाँ पर उपस्थित लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। स्वामी जी एक निर्भीक एवं साहसी संन्यासी थे वे जो ठान लेते थे उसे करके ही मानते थे। स्वामी अग्निवेश जी को मैंने काफी नजदीक से देखा है वे जब कभी भी मुसलमानों की सभा में जाते थे तो उनके धर्म में फैली हुई बुराईयों का जमकर खण्डन करते थे, मुसलमानों की सभा में मांसाहार के खिलाफ बोलना कोई आसान बात नहीं है, परन्तु स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक सन्त की तरह मांसाहार के खिलाफ बोलते थे और मांसाहार के दुष्प्रभाव को वैज्ञानिक तरीके से समझाने का प्रयास करते थे, स्वामी जी के विचारों को सुनकर उपस्थित सभी लोग तालियों से उनका सम्मान करते थे। क्योंकि स्वामी जी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सच्चे अनुयायी थे और वे सत्य बोलने से कभी भी डरते नहीं थे। स्वामी अग्निवेश जी का मानना था कि हमारा समाज सभ्य समाज बने जिसमें सभी लोग आपस में मिलकर देश की उन्नति का संकल्प लेकर कार्य करें और देश को आगे बढ़ायें। स्वामी अग्निवेश जी जब भी सत्य बोलते थे तो कई लोगों को ऐसा लगता था कि वे सनातन धर्म का विरोध कर रहे हैं, परन्तु ऐसा नहीं था वे जो भी बात रखते थे पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से रखते थे। मुनि जी ने एक और घटना सुनाते हुए कहा कि रामलीला का समय था तो मैंने स्वामी जी को उसमें आने के लिए आमंत्रित किया जिस पर स्वामी जी ने कहा कि रामलीला में मेरा क्या काम है, मैं ऐसे आयोजनों नहीं जाता जहाँ अपने ही महापुरुषों का मजाक बनाया जाता हो। मैंने उन्हें आग्रह

पूर्वक समझाया कि आप जरूर आयें मैं भी रामलीला में वही दिखाता हूँ जो राम का सही आदर्श स्वरूप है। पाखण्ड का मैं भी विरोधी हूँ। हमारे आग्रह को स्वीकार करते हुए स्वामी जी उस कार्यक्रम में आये और हमारे द्वारा दिखाये गये रामलीला के कार्यक्रम को उन्होंने सराहा। उस कार्यक्रम में जब स्वामी जी आये तो मैं उनसे बहुत अधिक प्रभावित हुआ। कुछ वर्ष पूर्व स्वामी जी ने ही सर्वधर्म संसद का एक पौधा लगाया जिसकी देख–रेख आज सभी धर्मों के नेताओं के सहयोग से मेरे

कंधों पर है। स्वामी जी ने जो पौधा लगाया वह आज वट वृक्ष बनकर तैयार हो रहा है। स्वामी अग्निवेश जी हमारे नेता थे, मैं उनका बहुत ही ज्यादा सम्मान एवं आदर करता हूँ। सर्वधर्म संसद की बैठक हो या मेरा जहाँ कहीं भी प्रवचन आदि होता है मैं अपने नेता स्वामी अग्निवेश जी को अवश्य याद करता हूँ, आज उनकी कमी मुझे बहुत खल रही है। क्योंकि वे सच्चे आर्य एवं

पिछले पृष्ठ का शेष

विभिन्न मत-सम्प्रदायों के धर्माचार्यों ने स्वामी जी से सम्बन्धित अपने संस्मरण सुनाये

निर्भीक संन्यासी थे। आज इस मंच के माध्यम से मैं आग्रह कर रहा हूँ कि स्वामी अग्निवेश जी के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए स्वामी आर्यवेश जी आगे आयें और समाज में पनप रही संकीर्ण मानसिकता, जातिवाद, नशाखोरी, धार्मिक उन्माद, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास सहित अनेक बुराईयों के खिलाफ आवाज उठायें और इन बुराईयों से समाज को निजात दिलाने में नेतृत्व प्रदान करें।

बौद्ध प्रतिनिधि तिब्बतियन पार्लियामेंट के डिप्टी स्पीकर आचार्य येशी स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए कहा कि स्वामी जी जब भी दलाई लामा जी से मिलते थे तो मुझे भी उन्हें मिलने का अवसर मिलता था। हमारे धार्मिक नेता दलाई लामा जी स्वामी जी को अत्यधिक सम्मान दिया करते थे। स्वामी जी में यह विशेषता थी कि वे सभी मतों के अनुयायियों को साथ लेकर चलने में अग्रणी रहते थे। उनका व्यक्तित्व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर का था, आज उनकी कमी हमें महसूस हो रही है।

बहाई मत के प्रतिनिधि और लोटस टेंपल दिल्ली के अध्यक्ष डॉ. ए. के मर्चेंट ने स्वामी जी को स्मरण करते हुए बताया कि स्वामी जी के साथ लगभग 33 वर्ष से मेरा सम्पर्क रहा और उनके साथ मुझे अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में कई बार सम्मिलित होने का अवसर मिला। वे पूरे समाज में सौहार्द, सद्भाव एवं मैत्री स्थापित करना चाहते थे। गरीबों के लिए संघर्षरत रहे। ऐसे महान व्यक्तित्व के जन्मदिवस पर हम सभी को उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए और उनके अधूरे कार्यो को पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए।

जैन सन्त आचार्य विवेक मुनि जी ने स्वामी अग्निवेश जी महाराज को याद करते हुए कहा कि वे बहुआयामी, क्रांतिकारी आर्य संन्यासी का जन्मदिन मना रहे हैं। स्वामी जी सदैव गरीब, मजदूर, असहाय, बेसहारा लोगों की लड़ाई लड़ते रहे। वे सर्वधर्म के लिए कार्य करते रहे। जहां कहीं भी धार्मिक टकराव का माहौल बनता था, स्वामी जी वहां पर सभी धर्मों के संतों को लेकर जाते थे और समस्या का समाधान करते थे। आज उनकी अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। वे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता की बात उठाते थे। वे सदैव सत्य की बात करते थे तो कुछ लोगों को लगता था कि वे पाखण्ड पर प्रहार कर रहे हैं।

मौलाना शाहीन कासमी जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी सच्चे आर्य थे। स्वामी जी आर्य के महत्व को समझते थे, आर्य का मतलब है सत्य को स्थापित करना। वे सभी को मोहब्बत से रहने की बात करते थे। वे स्वामी दयानन्द जी के मिशन को लेकर आगे बढ़ रहे थे। मैं स्वामी जी के विचारों से प्रभावित होकर उनसे 20 साल पहले जुड़ा और आज भी उनके विचारों को आगे बढ़ाने में लगा हूँ।

डॉ लाल रत्नाकर जी ने कहा कि स्वामी जी के साथ मैं सदैव जुड़ा रहा। वर्तमान में पूरे देश में जो हो रहा है उससे स्वामी अग्निवेश जी पूरी तरह से असहमत थे। स्वामी जी सामाजिक सद्भाव के समर्थक थे। आज वे होते तो निश्चित रूप से वर्तमान में फैली बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ते और हम सबका नेतृत्व करते।

सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेश याज्ञिक ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने राजा राममोहन राय के बाद सती प्रथा के खिलाफ आवाज उठाई। मैं उनसे बचपन में ही प्रभावित था। स्वामी जी के मिशन को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। अपने क्षेत्र में उनके विचारों और कार्यों को हम सबको करना चाहिए। हम सौभाग्यशाली हैं कि उनके साथ मुझे कार्य करने का मौका मिला। आज स्वामी जी की सबसे ज्यादा जरूरत महसूस हो रही है।

सामाजिक कार्यकर्ता श्री प्रेम बहुखंडी ने कहा कि आज के 20-25 साल बाद लोगों को विश्वास नहीं होगा कि स्वामी अग्निवेश जी जैसा कोई व्यक्ति था। अभी हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय के आये निर्णय की निंदा करते हुए उन्होंने कहा कि यदि आज स्वामी जी होते तो जज के कान के नीचे आवाज जरूर आती और स्वामी जी उसके खिलाफ लड़ाई अवश्य लड़ते। स्वामी जी धार्मिक नेता होने के बावजूद भी गरीब, मजदूर की लड़ाई लड़ते थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री विरजानन्द जी एडवोकेट ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी को आज हम सब उनके जन्मदिन पर याद कर रहे हैं और आज विश्व शांति दिवस भी है, परन्तु क्या पूरे विश्व में शांति है। स्वामी जी ने सती प्रथा, बंधुआ मजदूर, नशे, अन्धविश्वास एवं पाखण्ड सहित अनेक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। जिस कारण से उन पर कई बार हमले भी हुए। स्वामी जी विश्व शान्ति के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी जिस प्रकार का कार्य करते थे आज उनके विचारों एवं कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए स्वामी आर्यवेश जी नेतृत्व करें जिससे समाज में फैली विषमता की लड़ाई लड़ी जा सके।

पुरोहित सभा दिल्ली के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी अदभुत व्यक्तित्व थे। इमरजेंसी के दौर से लेकर उनके जीवन के अनेक कार्यो को याद करते हुए बताया कि स्वामी अग्निवेश जी और स्वामी इंद्रवेश जी ने अनेक ऐसे कार्य किये जिनसे हम सबको प्रेरणा लेकर कार्य करना चाहिए।

वरिष्ठ संन्यासी स्वामी यज्ञमुनि जी ने स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए कहा कि स्वामी जी वेद एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का असली स्वरूप मानव मात्र के सामने रखा।

बहन पूनम आर्या जी ने स्वामी अग्निवेश जी के कार्यों को बताते हुए कहा कि उन्होंने स्वामी दयानन्द जी के मिशन को आगे बढ़ाने में अपना पूरा जीवन लगा दिया। उन्होंने कहा कि स्वामी जी मानवता के प्रबल समर्थक थे। आज धर्म के नाम पर कैसी-कैसी घिनौनी हरकतें हो रही हैं, महिलाओं का उत्पीड़न हो रहा है, नशे का जाल बढ़ता जा रहा है। आज यदि स्वामी जी होते तो आगे बढ़कर इन बुराईयों के खिलाफ लड़ाई लड़ते।

सरदार धरम सिंह निहंग जी ने स्वामी जी को याद करते हुए कहा कि उनसे मेरा परिचय 2014 में हुआ। स्वामी जी हमेशा सबकी भलाई का कार्य करने के बारे में विचार-विमर्श करते थे। वे मानवता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा कि अनेक सामाजिक मुद्दों पर स्वामी जी के विचारों को सुनकर मैंने सोचा ये तो बहुत बड़े सन्त हैं। उन्होंने कहा कि उनके कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए स्वामी आर्यवेश जी आगे आएं तो हम सब अच्छा कार्य कर सकते हैं।

प्रिंसिपल आजाद सिंह ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी क्रान्ति थे। वे हर समय समाज की चिंता करते थे। वे हमेशा अपनी बात को शान्ति तरीके से रखते थे। स्वामी जी मानव कल्याण के लिए जिये और समाज से बुराइयों को दूर करने में लगे रहे।

डॉ नरेन्द्र वेदालंकार जी ने स्वामी अग्निवेश जी को याद करते हुए कहा कि आज उनका न होना हम सबको खल रहा है। स्वामी अग्निवेश जी की परिकल्पना आर्य राष्ट्र बनाने की थी, लेकिन कुछ कुंठित मानसिकता के लोग उनकी हमेशा टांग खींचते रहे। स्वामी जी ने बंधुआ मजदूरी प्रथा के खिलाफ इतना अधिक कार्य किया जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। वे हमेशा मनुष्य बनने की प्रेरणा देते थे।

गाजियाबाद से पधारे श्री निर्मल कुमार शर्मा जी ने स्वामी अग्निवेश को सर्वश्रेष्ठ संन्यासी बताया। वे कुरीतियों के विरोधी थे, वे हमेशा वैज्ञानिक तथ्य के आधार पर अपनी बात रखते थे।

इस कार्यक्रम में दिल्ली तथा आस-पास के प्रान्तों से जिन प्रमुख महानुभावों ने भाग लिया उनमें मानव सेवा प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रामपाल शास्त्री, बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या, श्री रामनिवास आर्य (नारनौल), स्वामी सोम्यानन्द जी, वयोवृद्ध नेता श्री मामचन्द्र रेवाड़िया, श्री बाबूराम शर्मा विभाकर, श्री रामपाल आर्य (नरेला), तेजपाल सिंह मल्लिक, श्री सुन्दर शास्त्री, श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री ऋषिपाल शास्त्री, श्री अवनीश कुमार, श्री कैलाश, श्री विष्णुपाल, श्री जावेद जी, श्री अशोक वशिष्ठ, श्री मकेन्द्र कुमार आर्य, श्री सोनू तोमर, श्री भानू प्रताप, श्रीमती रमा देवी, श्री अर्जुन लाल, श्री सुरेश यादव, श्री रघुवीर सिंह, श्री हरेन्द्र मलिक, श्री तोताराम भील, श्री विजेन्द्र हुड्डा, श्री मनोज आर्य, श्री योगेश आर्य, श्री उमेश कुमार आर्य, श्री रामशरण, सुधा कुमारी, श्री सुधीर कुमार शाह, सारिका क्षेत्री, नेहा कुमारी मिश्रा, श्री गोविन्द, श्री अनिल, श्री करणदीप सिंह, मोहम्मद नानक खान, निसार अहमद, श्री सुभाष दुआ, श्री रणवीर सिंह मलिक, डॉ. राजेन्द्र सिंह सहित अनेक नाम उल्लेखनीय हैं।

वैदिक उपासना ही सर्वश्रेष्ठ है।

—स्व० स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज

यह तो सर्वथा निश्चित ही है कि अन्य सिद्धान्तों के समान ईश्वर उपासना भी आर्य समाज की प्राचीन है क्योंकि लगभग ५५० वर्षों से पूर्व सिक्खों के गुरु और उनका बनाया ग्रन्थ भी न था। तब उनके गुरुद्वारे और उपासना का प्रचार भी कैसे होता? अतः यह प्रश्न होता है कि गुरुओं के पूर्वज ईश्वर की भक्ति किस प्रकार करते थे? इसी प्रकार १८०० वर्षो से पूर्व हजरत मुहम्मद साहिब भी न थे तो नमाज रोजा आदि भी न थे। पुनः मुस्लिम पैगम्बर के पितामह आदि किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे तथा २००० वर्ष से पूर्व ईसामसीह भी न थे तथा ईसाई भी न थे और न गिरजाघर ही थे तब ईसाइयों का भक्ति करने का प्रकार भी कैसे होता? लगभग ३००० वर्ष से पूर्व जैनों के तीर्थंकर भी न थे तो उनके मन्दिर और मूर्ति भी कैसे बनते? उस समय तीर्थंकरों के पूर्वज ईश्वर की पूजा कहां और कैसे करते थे? तथा ५००० वर्ष से पूर्व कृष्णा जी भी न थे, तो उनकी मूर्ति और कृष्णा मन्दिर भी कैसे बनते अतः प्रश्न होता है कि श्रीकृष्ण जी के पूर्वज ईश्वर की उपासना किस प्रकार करते थे? जब राम न थे तो उनके पूर्वज तथा महादेव जी के पूर्वज किस प्रकार ईश्वर की भक्ति करते थे? क्योंकि राम एवं महादेव के मन्दिर तथा मूर्ति तो पश्चात् ही बनने सम्भव हुए हैं इत्यादि– सभी प्रश्नों का एक ही उत्तर है कि जब ये मत और मतों के संचालक न थे तब एक ही निराकार ईश्वर की उपासना करते थे जैसे कि आज भी वैदिकधर्मी करते हैं। इससे यह स्पष्ट सिद्ध है कि ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्तम एवं सर्व प्राचीन प्रकार वैदिक धर्म में ही है।

वैदिक ईश्वर उपासना का प्रकार

जो मनुष्य ईश्वर की उपासना करना चाहे वह यम और नियमों का पालन अवश्य करे। जैसे विद्यार्थी परीक्षा पास करने के लिए अपने पाठ्यक्रम (कोर्स) की पुस्तकें याद करके ही उत्तीर्ण होते हैं वैसे ही उपासक भी यम नियम आदि योग के ८ अंगों का पालन करके ही ईश्वर के जानने योग्य होते हैं और ईश्वर उनको ही स्वीकार भी करते हैं। क्योंकि ईश्वर शुद्ध तथा न्यायकारी है। अतः अशुद्ध एवं अन्यायकारी से उसका मेल कहां? लोक में भी जिनके गुण कर्म स्वभाव मिलते हैं उनकी ही मित्रता होती है। अतः ईश्वर–भक्त होने के लिये ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश ही अपने गुण कर्म स्वभाव बनाता हुआ शुद्ध एकान्त देश में जाकर आसन लगा इन्द्रियों को विषयों से रोककर अर्थात् उपासना के समय ५ कर्मेन्द्रिय तथा ज्ञानेन्द्रियों को अपने वश करके नवीन ज्ञान न करे तथा पूर्व अनुभव किये हुए ज्ञान का चिन्तन भी न करे और निद्रा भी न आ जाये इस प्रकार सावधान होकर जैसे भूखे प्राणी को भोजन के अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता वैसे परमेश्वर से मिलने की इच्छा होनी चाहिए। और जैसे अत्यन्त प्यारे को किसी अभीष्ट कार्य के लिये सतत् चिन्तन किया जाता है, वैसे प्रेम से ओ३म् का जप करता हुआ प्राणायाम करे।

प्राणायाम की विधि और उसके भेद

यों तो प्राणायाम अनेक प्रकार का होता है इसके चार भेद प्रधान हैंः–

१. वाह्य वृत्ति=अर्थात् स्वांस को बाहर निकाल कर बाहर ही रोक दें जब घबराहट होने लगे तब छोड़ दें। जब रोकें तब बाहर ही रोकें।

२. आभ्यन्तर वृति= अर्थात् स्वांस को अन्दर भर अपनी शक्ति के अनुसार अन्दर ही रोक दें। जब रोकें अन्दर ही रोकें।

३. स्तम्भ वृति=श्वांस को जहां का तहां रोक दे न बाहर निकालें न अन्दर लें अपितु जैसे मनुष्य चकित (अचम्भे) में हो जाता है वैसे करता जाये।

४. वाह्याभ्यन्तर वृति=अर्थात् श्वांस को बाहर निकाल कर बाहर रोक दे और जब बाहर न रुके तो अन्दर लेकर अन्दर रोक दें। पुनः इसी प्रकार बाहर और अन्दर रोकते जायें। परन्तु जितनी अपनी शक्ति हो उसी के अनुसार प्राणायाम करने चाहियें।

प्राणायाम का फल

ततःक्षीयते प्रकाश वरणम्। यो०पा० २ सू० ५२

अर्थात् प्राणायाम से विवेक और वैराग्य का आवरण, अज्ञान, मोह, ममता, आदि क्षीण हो जाते हैं। तथा ज्ञान विज्ञान बढ़ते हैं।

धारणासु च योग्यता मनसः। यो० पा० २ सू० ५३

अर्थात् मन में धारणा एकाग्रता की शक्ति आ जाती है और मनु जी के कथनानुसार तो प्राणायाम करने से इन्द्रियों के सब दोष छूटकर निर्मल हो जाती हैं। जैसे कि अग्नि में तपाने से स्वर्ण आदि धातुओं के मल दूर हो जाते हैं।

महर्षि की सम्मति

जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। जब तक मुक्ति न हो, तब तक उसकी आत्मा का ज्ञान बढ़ता ही जाता है।

ऐसे एक दूसरे के विरुद्ध क्रिया करें तो दोनों की गति रुक कर प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियाँ भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र और सूक्ष्म रूप हो जाती है जो कि बहुत कठिन और सूक्ष्म विषय को भी शीघ्र ग्रहण करती है। इससे मनुष्य शरीर में वीर्य वृद्धि को प्राप्त होकर स्थिर बल, पराक्रम, जितेन्द्रियता, सब शास्त्रों को थोड़े ही काल में समझकर उपस्थित कर लेगा। स्त्री भी इसी प्रकार योगाभ्यास करे।

लेखक का अनुभव

प्राणायाम करने से सब प्रकार के छोटे एवं बड़े रोग उत्पन्न ही नहीं होते जो कदाचित हो भी जावें तो प्राणायाम से शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। यह अनुभूत है कि दमा, खांसी, नजला, जुकाम, अजीर्णता, कोष्ठ बद्धता हैजा और नमुनिया आदि भयंकर रोग भी नष्ट हो जाते हैं तथा आत्मिक ज्ञान तो ऐसे होता है जैसे हाथ पर रखी हुई वस्तु का हो जाता है और प्राण के स्ववश होने पर परमात्मा तथा सूर्यादि लोक लोकान्तरों का भी यथार्थ ज्ञान हो जाता है। अतएव योगदर्शन में योग के ८ अंगों में प्राणायाम को चतुर्थ श्रेणी में माना है। इसीलिये वैदिक संध्मा में ५ वां प्राणायाम मन्त्र है। जो केवल मन्त्रोच्चारण करते हैं और प्राणायाम नहीं करते वे संध्या भी पूर्ण नहीं करते। क्योंकि प्राणायाम संध्या का ५ वां अंग है। अंगों से मिलकर ही अंगी बनता है। यदि अंग नहीं रहें तो अंगी कैसा अतएव अनेक नर नारी अनेक वर्षों से संध्या करते हैं किन्तु उनको स्थिरता नहीं मिली अतः जो उपासक संध्या को सांगोपांग करेंगे उनको ईश्वर आदि तत्वों का यथार्थ भान होगा और अपने आपको सफल तथा कृत्य कृत्य मानेंगे।

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज के भामाशाह, प्रसिद्ध दानवीर, विश्व आर्य रत्न ठाकुर विक्रम सिंह जी का 80वाँ जन्मोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया

प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सार्थक बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि उनका अधिकांश जीवन आर्य समाज के प्रचार–प्रसार को समर्पित रहा और आज वह आर्य प्रचारकों का खुले दिल से सम्मान कर रहे हैं। मैं ईश्वर से इनके दीर्घायु जीवन की कामना करते हुए सैकड़ों वर्षों तक निरंतर प्रेरणा रूप में बने रहने की कामना करता हूं।

गुरुकुल रुड़की हरियाणा की आचार्या सुकामा जी ने कहा कि वह शस्त्र एवं शास्त्र दोनों विद्याओं में निपुण हैं।

राष्ट्र निर्माण पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. आनंद कुमार जी ने कहा कि ठाकुर विक्रम सिंह प्रत्येक वर्ष अपने जन्मदिन पर हम सबका सम्मान करते हैं इसीलिए उनके अगले जन्मदिन के अवसर पर हम उनका सम्मान करें और 81 लाख रुपए की धन राशि भेंट करके उनका मनोबल बढ़ायें।

राष्ट्रकवि सारस्वत मोहन मनीशी जी ने अपने विचार कविता के माध्यम से प्रस्तुत किए और उनके जीवन का बखान करते हुए उन्हें समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बताया।

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने कहा कि कई बार आर्य समाज के विद्वान, प्रचारक तथा संन्यासियों को आर्थिक कमजोरी के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ता है। ठाकुर विक्रम सिंह जी ने इन सब की परेशानी को समझा और उनके लिए हमेशा सहयोग का हाथ बढ़ाया। परमात्मा उनको और ज्यादा ताकत, शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें ताकि वह इसी प्रकार से ऋषि द्वारा बताये गये कार्यों को आगे बढ़ाते रहें।

अपने जन्मदिन के अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद प्रकट करते हुए ठा. विक्रम सिंह जी ने कहा कि आप सबकी शुभकामनाएं एवं संन्यासियों का आशीर्वाद मुझे निरंतर मिलता रहा है। मैं स्वयं एक आर्य प्रचारक रहा हूं और एक प्रचारक के जीवन में किस तरह की कठिनाइयां आती हैं उनसे भलीभांति परिचित हूं। इसलिए मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने मेरे जन्मदिन को इस रूप में मनाने का निर्णय लिया और मैं परिवार के सभी सदस्यों का आभार प्रकट करता हूं कि वह मुझे इस तरह के कार्य करने के लिए मेरी मदद करते हैं। उन्होंने अपने जीवन से जुड़ी कई रोमांचक घटनाएं भी सुनाई। जन्मदिन का कार्यक्रम पूर्ण उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में जिन विशिष्ट महानुभावों की उपस्थिति रही उनके नाम इस प्रकार हैं – स्वामी मुक्तिवेश जी, स्वामी सुरेंद्रानंद जी, स्वामी यज्ञमुनि जी, स्वामी सुखानंद जी, आचार्य सुखदेव तपस्वी जी, आचार्य कपिल, डॉ. श्वेतकेतु शर्मा (बरेली), उगता भारत के संपादक श्री राकेश आर्य, डॉ. प्रमोद जी, श्री सोमदेव शास्त्री, श्री महेंद्र भाई, आर्य प्रकाशन से श्री संजीव आर्य सहित गुरुकुलों के आचार्य, तथा ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणियाँ आदि उपस्थित रहीं।

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2021-23
Licence to Post without prepayment of Postage. U (c)-289/2021-23

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- ***www.facebook.com/SwamiAryavesh*** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

आर्य समाज ब्यापुर (बिहार) के अग्निवेश सभागार में 21 सितम्बर, 2022 को

विश्व शांति दिवस एवं स्वामी अग्निवेश जी का 84वाँ जन्मदिवस मनाया गया

दिनांक 21 सितम्बर, 2022 को आर्य समाज ब्यापुर के 'अग्निवेश सभागार' में विश्व शांति दिवस एवं स्वामी अग्निवेश जी का 84वाँ जन्मदिन सामाजिक सद्भावना सम्मेलन श्री रामानंद प्रसाद आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सम्मेलन के मुख्य अतिथि पद्मश्री सुधा वर्गीज जी ने स्वामी अग्निवेश जी के साथ किए गये कार्यों को स्मरण करते हुए बताया की स्वामी जी सतत मानवता की लड़ाई लड़ते रहे। वे हमेशा लोगों को शांति एवं भाईचारा स्थापित करने पर जोर दिया करते थे।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता श्री जग नारायण सिंह ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी एक निर्भीक वक्ता थे। वे अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करते रहे।

बाढ़, सुखाड़, कटाव के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामभजन सिंह यादव ने अपना विचार रखते हुए कहा कि स्वामी अग्निवेश जी दबे, कुचले, बंधुआ मजदूरों के हक की लड़ाई लड़ते रहे।

आर्य समाज ब्यापुर के प्रधान श्री अरूण आर्य ने स्वामी अग्निवेश जी को स्वामी दयानन्द का सच्चा अनुयायी बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री रामानन्द जी ने कहा कि स्वामी अग्निवेश जी महाराज बंधुआ मजदूरी, नारी उत्पीड़न, कन्या भ्रूण हत्या, शराबबंदी, अंधविश्वास एवं पाखंड तथा अन्य अनेक बुराईयों के खिलाफ आजीवन लड़ाई लड़ते रहे और समाज के उत्थान के लिए कार्य करते रहे। उनकी लड़ाई मील का पत्थर साबित हुई है। उन्होंने दु:ख व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज का दुर्भाग्य है कि समय रहते आर्य समाजियों ने स्वामी जी को नहीं पहचाना।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं में सर्वश्री सुनील कुमार अधिवक्ता, प्रमोद कुमार, सुदामा आर्य, स्वामी चंद्रकेतु, रोशन आर्य, मिथिलेश यादव, ब्यापुर के मुखिया लखी जी, विमलेश जी तथा संजय कुमार आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। अन्त में स्वामी अग्निवेश अमर रहें से सभागार गुंजायमान हो गया। शांति पाठ के पश्चात सभा समाप्त हुई।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित
अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

1100/- रुपये में उपलब्ध है

सत्यार्थ प्रकाश
बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई-मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
दूरभाष - 011-23274771, 011-42415359, मो.:-9868211979, 8218863689
ई-मेल : ***sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in***

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।